ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-6* July- 2020
Innovation The Research Concept

स्नातक स्तर के थारू जनजाति के विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति आत्म–जागरूकता का अध्ययन

Study of Self-Awareness of Education of Students of Graduate Level Tharu Tribe

Paper Submission: 01/07/2020, Date of Acceptance: 22/07/2020, Date of Publication: 25/07/2020

रिजवाना सिद्दीकी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा संकाय,
एस0 एस0 जे0 कैम्पस,
अल्मोड़ा, कुमाऊँ
विश्वविद्यालय, नैनीताल,
उत्तराखण्ड, भारत

गोपाल सिंह
शोध छात्र,
शिक्षा संकाय,
एस0 एस0 जे0 कैम्पस,
अल्मोड़ा, कुमाऊँ
विश्वविद्यालय, नैनीताल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य ऊधम सिंह नगर जिले के स्नातक स्तर के थारू जनजाति के विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति आत्म जागरूकता का पता लगाना था। जिसका अध्ययन करने के लिए स्नातक में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लिया गया। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए 50 विद्यार्थियों का चुनाव उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श के द्वारा किया। आंकड़ों को एकत्र करने के लिए कुमार एवं कुमार द्वारा निर्मित आत्म जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण कर उनका प्रतिशत निकाला गया तथा निष्कर्ष में यह पाया गया कि स्नातक स्तर के थारू जनजाति के विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति आत्म–जागरूकता में महत्वपूर्ण अन्तर है।

The research work presented was to find out the self-awareness of education of the students of graduate level Tharu tribe of Udham Singh Nagar district. The students studying undergraduate were taken to study. For the research work presented, 50 students were selected with full objective purpose. Self-awareness scales created by Kumar and Kumar were used to collect data. Percentages were analyzed and their findings were found and in conclusion it was found that there is a significant difference in self-awareness of education of the students of Tharu tribe at graduation level.

मुख्य शब्द : थारू जनजाति, आत्म–जागरूकता, अनुसूचित जाति, शिक्षा का अधिकार ।
Tharu tribe, self-awareness, scheduled caste, right to education.

प्रस्तावना

शिक्षा का अधिकार एक मौलिक अधिकार है। इसके बिना व्यक्ति को एक पशु के समान समझा गया है। भारत एक ऐसा देश है जिसमें भिन्न–भिन्न जाति, वर्ग, समुदाय के लोग रहते हैं। इसी जाति वर्ग में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति भी रहती है। यह जनजातियाँ अन्य जातियों के मुकाबले पिछड़ी होती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15–3, 46, 330, 332, 335, 338, 339, 340–1, 341–1 अनुसूचित जाति तथा जनजाति से सम्बन्धित है। जिसका सम्बन्ध आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक उन्नति से है। इन अनुच्छेदों में अनुसूचित जाति तथा जनजाति में सारे पक्षों को शामिल किया गया है। गिलिन तथा गिलिन – "स्थानीय आदिवासियों के किसी भी ऐसे संग्रह को हम जनजाति कहते हैं जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता हो, तथा सामान्य संस्कृति के अनुसार व्यवहार करता हो।" इन्हीं जनजातियों में एक जनजाति थारू भी है। जो उत्तर भारत के उत्तराखण्ड राज्य के ऊधम सिंह नगर जिले से लेकर उत्तर प्रदेश के कई जिलों में फैली हुई है। इन जनजातियों की अपनी एक विशेषता है जिससे इनकी एक अलग तरह से पहचान की जाती है। इनका रहन सहन, खान–पान, वेशभूषा आदि अन्य जातियों से अलग है। इन जनजातियों में पुरुष प्रधानता नहीं देखी जाती। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एक ऐसा अधिकार है जो कि अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए सुधार का कार्य करती है।

आत्म जागरूकता किसी व्यक्ति को स्वयं जानने की प्रक्रिया है। जब बात शिक्षा की आती है तो अकसर यह देखा जाता है कि व्यक्ति उसके प्रति कितना आत्म.–जागरूक है। शिक्षा की वह प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति अपनी स्वयं की पहचान, विश्वास, गुण दोष, प्रेरणा एवं भावना जैसे व्यवहारों को ठीक से जानने का प्रयास करता है। और अपने व्यवहार से दूसरों को प्रभावित करने का प्रयास भी करता है। व्रायर्ड एवं स्टूअर्ट (2005) ने आत्म जागरूकता में निष्पक्षरूप से अपने व्यक्तिगत व्यवहारों, ताकतों, विश्वासों की जांच करना बताया है। आत्म जागरूकता को आत्म क्षमता भी कहा गया है। जिससे व्यक्ति अपने आप को विश्लेषित भी करता है और वह इनमें तरह–तरह के गुण दोष, विचारों, आदर्शों तथा भावनाओं को शामिल करने का प्रयास करता है। फॉरचक (2008) के अनुसार आत्म जागरूकता अपने विचारों, भावनाओं, गुण दोषों, पूर्वागृहों, प्रेरणाओं को पहचानने तथा समझने की प्रक्रिया है।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान बदलते परिदृश्य में विद्यार्थियों को नई–नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है इन्हीं चुनौतियों को ध्यान में रखकर थारू जनजाति की समस्या को देखते हुए इसे अध्ययन का विषय बनाया गया है क्योंकि यह जनजाति सभी जातियों में सबसे से पिछड़ी है जिससे इस अध्ययन के द्वारा यह पता लगाया जा सके कि ये शिक्षा को लेकर कितने आत्म–जागरूक हैं। तथा शिक्षा से सम्बन्धित सभी तथ्यों के बारे में उन्हें मालूम हो। जितना विद्यार्थी शिक्षा को लेकर आत्म जागरूक होगा वह उतना ही अधिक दूसरों को जागरूक करेगा।

समस्या

स्नातक स्तर के थारू जनजाति के विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति आत्म जागरूकता का अध्ययन।

मुख्य शब्दों का परिभाषीकरण

स्नातक

स्नातक को भारतीय शिक्षा पद्धति का ग्रेजुऐट कहा जाता है। सामान्य शब्दों में इण्टरमीडिएट की पढ़ाई खत्म होने के बाद शुरू होने वाली शिक्षा।

थारू जनजाति

थारू जनजाति से तात्पर्य समाज के ऐसे वर्ग जो अपने रहन–सहन, रीति–रिवाज, खान–पान में एक विशिष्ट योग्यता रखता है।

शिक्षा

शिक्षा सीखने की सुविधा ज्ञान कौशल, मूल्यों, विश्वासों और आदतों के अधिग्रहण की प्रक्रिया है।

आत्म जागरूकता

आत्म जागरूकता से तात्पर्य से व्यक्ति के अन्तः दर्शन की क्षमता तथा स्वयं की बाह्य जगत के प्रति जागरूकता से है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. स्नातक स्तर के थारू जनजाति के विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति आत्म जागरूकता का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के थारू जनजाति के छात्र–छात्राओं का शिक्षा के प्रति आत्म–जागरूकता का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

Pais, V.C & others (2016) ने भावात्मक स्मृति के निर्माण में आत्म–जागरूकता के प्रभाव का अध्ययन किया जिसके लिए 20 बालकों को अध्ययन में शामिल किया गया। आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए 600 विश्व प्रसिद्ध तस्वीरों का प्रयोग किया गया। सांख्यिकी विधियों में मध्यमान (mean), प्रमाप विचलन (S.D.), सह सम्बन्ध तथा एनोवा का प्रयोग किया गया परिणाम में यह पाया गया कि भावात्मक स्मृति निर्माण में आत्मजागरूकता के प्रभाव को देखा गया। सिम्पसन, एस.डी. (2015) ने गुणात्मक अध्ययन किया, जिसमें इन्होंने वैश्विक दक्षता के विकास में आत्म–जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन के लिए निदर्शन विधि के द्वारा 05 व्यक्तियों को चुना गया। आंकड़ो के एकत्रीकरण के लिए साक्षात्कार तथा अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया। परिणाम में यह पाया गया कि वैश्विक दक्षता के विकास में आत्म–जागरूकता सहायता करती है।

परिकल्पना

1. स्नातक स्तर के थारू जनजाति के विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति आत्म–जागरूकता समान है।
2. स्नातक स्तर के थारू जनजाति के छात्र–छात्राओं का शिक्षा के प्रति आत्म जागरूकता समान है।

शोध प्रारूप

शोध प्रारूप में निम्नलिखित बिन्दुओं को रखा गया है।

अध्ययन का सीमांकन

1. प्रस्तुत अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड राज्य के ऊधम सिंह नगर जनपद के खटीमा विकास खण्ड को अध्ययन के लिए शामिल किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखण्ड राज्य ऊधम सिंह नगर जनपद के खटीमा विकास खण्ड के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर में अध्ययनरत थारू जनजाति के 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श में शामिल किया गया है। न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि (purposive sampling method) से किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु कुमार एवं कुमार द्वारा निर्मित आत्म–जागरूकता मापने का प्रयोग किया गया है। जो कि पूर्णतः मानकीकृत है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर उनका प्रतिशत निकाला गया है।

विश्लेषण–01

अध्ययन का उद्देश्य– 1. स्नातक स्तर के थारू जनजाति के विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति आत्म–जागरूकता का अध्ययन करना के अन्तर्गत परिकल्पना H_1। स्नातक स्तर के थारू जनजाति के विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति आत्म जागरूकता समान है।

तालिका–01
आत्म जागरूकता मापने का विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों का प्रतिशत

आत्म–जागरूकता	उच्च	औसत	निम्न
प्रतिशत	56	26	18
योग्य (N = 50)	28	13	09

परिणाम की व्याख्या

उपरोक्त अध्ययन में आत्म जागरूकता मापने हेतु 50 विद्यार्थियों के आंकड़ों का अध्ययन कर उनका विश्लेषण कर प्रतिशत निकाला गया है। विश्लेषण के द्वारा यह पता चला कि 56 प्रतिशत (28) विद्यार्थियों के आत्म–जागरूकता का स्तर उच्च है। 26 प्रतिशत (13) विद्यार्थियों का आत्म जागरूकता स्तर औसत तथा 18 प्रतिशत (09) विद्यार्थियों का आत्म जागरूकता स्तर निम्न है।

विश्लेषण–02

अध्ययन का उद्देश्य 02 स्नातक स्तर के थारू जनजाति के छात्र–छात्राओं का शिक्षा के प्रति आत्म जागरूकता का अध्ययन करना के अन्तर्गत परिकल्पना H_2 स्नातक स्तर के थारू जनजाति के छात्र छात्रओं का शिक्षा के प्रति आत्म जागरूकता समान है।

तालिका–02
आत्म जागरूकता मापने का विभिन्न स्तरों पर छात्र–छात्राओं का प्रतिशत
प्रतिशत छात्र

आत्म–जागरूकता	उच्च	औसत	निम्न
प्रतिशत	52	28	20
छात्र योग (N = 25)	13	07	05

तालिका–03
प्रतिशत छात्रायें

आत्म–जागरूकता	उच्च	औसत	निम्न
प्रतिशत	44	32	24
छात्रायें योग (N = 25)	11	08	06

परिणामों की व्याख्या

उपरोक्त अध्ययन में 50 विद्यार्थियों में से 25 छात्र तथा 25 छात्राओं को शामिल कर उनका प्रतिशत निकाला गया है, विश्लेषण से यह पता चलता है कि 52 प्रतिशत (13) छात्र, 44 प्रतिशत (11) छात्राओं का आत्म जागरूकता स्तर उच्च है। 28 प्रतिशत (07) छात्र तथा 32 प्रतिशत (08) छात्राओं का आत्म जागरूकता स्तर औसत है और 20 प्रतिशत (05) छात्र तथा 24 प्रतिशत (06) छात्राओं का आत्म जागरूकता स्तर निम्न है।

निष्कर्ष

परिणामों से प्राप्त प्रतिशत से यह पता चलता है कि स्नातक स्तर के थारू जनजाति के छात्र– छात्राओं का शिक्षा के प्रति आत्म जागरूकता में महत्वपूर्ण अन्तर है अतः परिकल्पना H_2 अस्वीकार की जाती है।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के थारू जनजाति के विद्यार्थियों के शिक्षा के प्रति आत्म जागरूकता भिन्न–भिन्न हैं जबकि शिक्षा के इतने सारे अधिकार और अधिनियम होने के बावजूद भी यह जनजाति शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ी है इसलिए इस जनजाति को स्वयं जागरूक रहकर संविधान द्वारा प्रदान किये गये अधिकारों का प्रयोग कर आत्म जागरूक बने। तथा अपने बांकी पीढ़ी को भी आत्म जागरूक बनायें। अगर वे जनजाति स्वयं आत्म जागरूक होगी तो इसका असर आने वाले भावी पीढ़ियों पर भी सकारात्मक प्रभाव डालेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अरूण कुमार (2017) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली, ISBN-978-81-208-2410-02 पेज नं0–101*
2. *भारत का संविधान 2010: वेयर एक्ट, प्रयाग पुस्तक सदन प्रकाशन इलाहाबाद।*
3. *मदान, पूनम (2015): भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास तथा समस्यायें, अग्रवाल पब्लिकेशन, IIIrd edition PP: 422*
4. *मजूमदार, डी0एन (1942) : द थारूज एण्ट देअर ब्लड ग्रुप, जर्नल ऑफ रॉयल, एशियाटिक सोसाइटि ऑफ बंगाल, वाल्यूम एक्ट पृ0 सं0– 2,33।*
5. *मुकर्जी, नाथ, डा0 रवीन्द्र (2018): समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली–7 PP: 96-97*
6. *शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) अधिसूचना, भारत का राजपत्र असाधारण मानव संसाधन विकास मंत्रालय रजि0 सं0– डी0एल0– 3304199 नई दिल्ली अप्रैल 09,2010*
7. *https://him.wikipedia.org>wiki*
   https://sg.inflibnet.ac.in>jspui (PDF)